

अनुसरण करना चाहिए टि. बुद्ध के निर्वाण के पश्चात् उनके अनुयायियों ने दो पंथ बना लिए, उत्तर भारत में महायान पंथ का जन्म हुआ जिसके अनुयायियों ने चीन-जापान आदि देशों में बौद्ध संप्रदाय का प्रचार किया, दक्षिण भारत में हीनयान का जन्म हुआ जिसके अनुयायी-श्रीलंका, जावा, सुमात्रा आदि में प्रचारार्थ गए, हीनयान लोक कल्याण से दूर रहते हुए व्यक्तिगत निर्वाण का समर्थक होने के कारण ही 'हीनयान' (अर्थात् 'तुच्छ मार्ग') कहलाया।

हीनयानी वि. (तद्.) हीनयान के सिद्धांतों को मानने वाले (बौद्ध भिक्षु)।

हीनयोग वि. (तत्.) निकृष्ट, भ्रष्ट पुं. आयु. 1. औषधियों का ऐसा मिश्रण जिसमें कोई औषधि निर्धारित अनुपात से कम हो 2. अनुपान, पथ्य इत्यादि में कमी।

हीनयोनि वि. (तत्.) 1. दुश्चरित्र माँ की (संतान) 2. नीच कुल में उत्पन्न।

हीनरस पुं. (तत्.) काव्य. साहित्य का एक दोष, रस की अभिव्यक्ति के प्रसंग में विरुद्ध वर्णन का दोष।

हीन-वर्ण पुं. (तत्.) नीच जाति या वर्ण वि. नीच जाति का।

हीनवाद पुं. (तत्.) 1. बेकार का या निरर्थक तर्क, फिजूल की बहस 2. झूठी गवाही।

हीनवादी वि. (तत्.) हीनवाद करने वाला।

हीनवीर्य वि. (तत्.) 1. दुर्बल, बलहीन 2. नपुंसक, क्लीव।

हीन-हयात पुं. (अर.) जीवित रहने का अवधि-काल, जीवन काल अव्य. जीवन पर्यंत, आजीवन।

हीनांग वि. (तत्.) जिसके किसी अंग में कोई कमी हो, विकलांग।

हीना-पटीन पुं. (तत्.) ऐसा अर्थदंड जिसके साथ ही क्षतिपूर्ति भी करनी पड़े।

हीनार्थ वि. (तत्.) 1. जिसका प्रयोजन सिद्ध न हो सका हो, निष्फल 2. वह जो लाभ से वंचित रह गया हो 3. अनुचित अर्थ वाला, निरर्थक।

हीनित वि. (तत्.) वंचित, रहित।

हीनी वि. (तद्.) कमी वाला, क्षुद्र, नीच, तुलनात्मक रूप से कम।

हीनोपमा वि. (तत्.) काव्य. उपमा का वह भेद जिसमें उपमान का निर्धारण स्तरीय न हो अर्थात् किसी बड़ी वस्तु की उपमा छोटी वस्तु से दी जाए।

हीमोग्लोबिन पुं. (अं.) रुधिर कोशिकाओं में रक्तकणों को लाल रंग प्रदान करने वाला एक जटिल प्रोटीन जो ऑक्सीजन का संवाहक होता है, रक्त कणों में स्थित इस प्रोटीन की मात्रा ही संबंधित व्यक्ति की शारीरिक क्षमता और ऊर्जा की परिचायक होती है।

हीय/हीयरा/हीया पुं. (तत्.) हृदय, मन।

हीयमान वि. (तत्.) क्रमशः कम होता हुआ, क्षीयमाण।

हीर पुं. (तद्.) 1. हीरा 2. वज्र 3. हार, माला 4. सिंह 5. सर्प 6. काव्य. एक समवर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में भ, स, न, ज, न, र इन वर्णों के योग से 18 वर्ण होते हैं तथा 10-8 पर यति होती है 7. काव्य. एक सममात्रिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में 23 मात्राएँ होती हैं तथा 6, 6, 11 पर यति होती है 8. सार भाग, (किसी वस्तु का) सार तत्त्व जैसे- इलायची का हीर 9. वृक्ष के तने के बीच में स्थित लकड़ी का सारभाग 10. शरीर की शक्ति, बल 11. शुक्र, वीर्य स्त्री. (देश.) एक लता जिसके फलों के रस से बेंगनी स्याही बनती है, करसनी टि. इस लता की पत्तियाँ और जड़ औषधीय होती हैं।

हीरक पुं. (तद्.) 1. हीरा नामक मणि 2. वज्र 3. 'हीर' नामक सममात्रिक छंद।

हीरक जयंती स्त्री. (तत्.) 1. किसी व्यक्ति अथवा संस्था के जन्म/प्रारंभ के 60 वें वर्ष के पूरे होने